श्री शत्रुंजय - मुक्ति सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

C/o. शाह गोविन्दजी वीरम फेक्टरी कम्पाउन्ड़, मोंढा रोड, औरंगाबाद (महा.) ४३१ ००१

सा विद्या या विमुक्तये

सम्यग्ज्ञान प्रवेशिका

(1)

◆◆◆ अभ्यासक्रम जवाब पत्र ◆◆◆

ऐनरोलमेन्ट नंबर प्रथम वर्ष 1

शहर Answer Sheet -2021

विद्यार्थी का नाम ____________________

प्रश्न-१ रिक्त स्थान

(१)	આત્મ પ્રદેશ
(२)	પુણ્યોદય
(३)	મોહનીય
(४)	સન્માન
(५)	મનુષ્યગતિ
(६)	નવતત્વ
(७)	રત્ન જડિત સોને के सिंहासन पर
(८)	કૈવલ્ય
(९)	સિદ્ધત્વ (સિદ્ધત્વ)
(१०)	વ્યક્તિયો
(११)	સ્થાવર
(१२)	वीसस्थानक
(१३)	નવકાર મહામંત્ર
(१४)	ઉપદ્રવ
(१५)	દુર્લભ
(१६)	દેવ ગુરુ
(१७)	નિર્જરા
(१८)	તેજસ્વી
(१९)	કેવળજ્ઞાન
(२०)	ચેતના રહિત

प्रश्न-२ एक ही शब्द में

(१)	ભરત
(२)	તિર્યંચ
(३)	પંચમહાભૂત
(४)	મહાવીર સ્વામી
(५)	જુહાડા
(६)	શતાયુદ્ધ
(७)	કડુએ
(८)	અગુરુલઘુ
(९)	પરમેષ્ઠિ
(१०)	बारीश का अभाव
(११)	धर्मघोषसूरि
(१२)	ભાલ
(१३)	સુદર્શના
(१४)	चैतन्य
(१५)	"હાકાર"

(५)	મુક્ત
(६)	ત્રસ
(७)	દીપક સમાન
(८)	રત્ન
(९)	ફન
(१०)	પ્રતિહારી
(११)	જાનના
(१२)	મોક્ષ
(१३)	क्रम से
(१४)	વનસ્પતિ કાય
(१५)	ભેદ
(१६)	અનેક
(१७)	વેદ
(१८)	સાધુઓ को
(१९)	ઓળે का
(२०)	સ્વરૂપ

प्रश्न-३ शब्दार्थ

(१)	તીન પ્રકાર સે
(२)	બયાલીસ
(३)	વિનાશ કરને વાલા
(४)	और

प्रश्न-४ जोडियाँ लगाओ

(१)	3	(६)	4
(२)	10	(७)	9
(३)	7	(८)	2
(४)	8	(९)	85
(५)	1	(१०)	6

प्रश्न-५ संख्या में जवाब

(१)	20
(२)	25
(३)	278
(४)	3
(५)	10
(६)	36
(७)	6
(८)	2 લાખ
(९)	4.000
(१०)	19

	प्रश्न-६ ✓ या ×		प्रश्न-७ यह वाक्य किस पृष्ठ पर
(१)	×	(१)	13
(२)	×	(२)	4
(३)	✓	(३)	8
(४)	✓	(४)	11
(५)	×	(५)	17
(६)	✓	(६)	18
(७)	✓	(७)	21
(८)	×	(८)	9
(९)	✓	(९)	15
(१०)	×	(१०)	16

प्रश्न-१ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-२ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-३ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-४ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-५ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-६ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-७ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-८ मिले हुए गुण	=	कुल गुण

रीमार्क ____________________ जांचनेवाले की सही ____________________

प्रश्न - ८

सिद्ध पासा का दृष्टांत

१. एक जुआरी था. वह अपना पूरा समय जुआ खेलने में ही व्यतीत करता था. और उसकी विशेषता थी की वो कभी भी हारता नहीं था. उसका कारण था की उसके पास जो पासा था वो सिद्ध पासा था। बहुत लोग उसे हराने का प्रयत्न करते लेकिन जीत उसीकी होती थी। प्रभु श्री वीतराग भगवान का शासन यह कहता है कि विशेष सिद्धी से इस जुआरी को हरा दे और जीत प्राप्त भी कर ले. लेकिन जो मानव भव मिला है उसे आत्म साधन के बिना असफल बनाया है बेकार किया हो उन्हे फिर से मानव भव मिलना पुर्वभव है

"नवकार मंत्र महान"

२. नवकार मंत्र में अरिहंत, सिद्धो, उपाध्यायो, आचार्यो साधुओ सभी को नमस्कार किया है। तीन लोक में नवकार मंत्र से महान कोई मंत्र नहीं है। नवकार मंत्र का स्मरण धार्मिक अनुष्ठानो में तो करते है अपितु इसका स्मरण मरण आदि स्थान पर भी किया जा सकता है। नवकार मंत्र के स्मरण से सभी संकटो का नाश होता है और मोक्ष व सुख की प्राप्ति होती है।

"जीव विचार का ज्ञान होना अति आवश्यक"

३. जीव विचार का ज्ञान होना आवश्यक है कारण की इसके द्वारा हमे जगत के जीवो के बारे मे मालुम पडता है जीवमात्र का जीवन अनमोल है हीरा मोती वगैरह का मूल्य है जबकि एकमात्र जीव का कोई मूल्य नहीं है। जी.वि के अध्ययन से जीवो के प्रति शुभ भाव हमारे मन मे आते है। जीव के 2 भेद मुक्त व संसारी. संसारी के 2 भेद त्रस व स्थावर व स्थावर के पृथ्वीकाय, अपकाय, तेउकाय, वायुकाय व वनस्पतिकाय के बारे में जानने को मिलता है। इन सभी जीवो की रक्षा करना हमारा धर्म है ये हम जी.वि. से ही जान सके है।

हेय ज्ञेय उपादेय

४. हेय- कुछ तत्व छोडने योग्य है जैसे पुण्य, पाप, आश्रव व बन्ध. पाप अशुभ कर्म का पुण्य शुभ कर्म का आश्रव है- हेय का अर्थ ही त्यागने से है

ज्ञेय- जीव व अजीव तत्व है- ज्ञेय का अर्थ है जानने योग्य। कुल नवतत्व के भेद मे 72 भेद जीव व 184 भेद अजीव है इसमे से 28 भेद ज्ञेय अर्थात जानने योग्य है

उपादेय- अर्थात कुछ तत्व ग्रहण करने योग्य है- ये तत्व है संवर निर्जरा, मोक्ष और पुण्यतत्व

"ऋषभ देव प्रभु की वंश स्थापना"

५. जब प्रभु लगभग एक वर्ष के हुए तब प्रभु के वंश की स्थापना करना ऐसा इन्द्र का आचार है खाली हाथ प्रभु के पास नहीं जाते सोचकर इन्द्र गन्ना लेकर नाभिकुलकर की गोद मे बैठे प्रभु के पास आए तब प्रभु ने गन्ना देखकर अपने हाथ फैलाए प्रभु को इक्षु की अभिलाष है जानकर प्रभु का वंश इक्ष्वाकु नामक हो ऐसा कहकर इन्द्र ने वंश की स्थापना की।